ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 14 अंक 33 कुल पृष्ठ-8 13 से 19 जून, 2019 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853120 सम्वत् 2076 ज्ये. शु.-9

आर्य जगत के तपोनिष्ठ, योगनिष्ठ एवं ब्रह्मनिष्ठ संन्यासी स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती का निधन आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति है

– स्वामी आर्यवेश

स्वामी दिव्यानन्द आजीवन योग को समर्पित रहे

– स्वामी ओमवेश

स्वामी दिव्यानन्द जी सदैव मार्ग दर्शक के रूप में प्रेरणा देते थे
– स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

स्वामी दिव्यानन्द जी का जीवन सात्विकता से ओत–प्रोत था
– स्वामी यतीश्वरानन्द

आर्य जगत् के तपोनिष्ठ संन्यासी स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती का गत दिनों लम्बी बीमारी के बाद देहावसान हो गया। उनकी अन्त्येष्टि कनखल, (हरिद्वार) सती घाट श्मशान भूमि पर पूर्ण वैदिक रीति से की गई। अन्त्येष्टि में आर्य जगत् के वरिष्ठ संन्यासियों, विद्वानों एवं कार्यकर्ताओं ने भारी संख्या में सम्मिलित होकर स्वामी दिव्यानन्द जी महाराज को अन्तिम विदाई दी। अन्त्येष्टि से पूर्व पतंजलि योगधाम ज्वालापुर से स्वामी दिव्यानन्द जी के पार्थिव शरीर को शवयात्रा के रूप में सैकड़ों आर्यजनों ने श्मशान भूमि तक अपने दुःखी हृदय से पहुंचाया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, दर्जनों गुरुकुलों के संचालक स्वामी प्रणवानन्द जी, पूर्व गन्ना मंत्री, उ. प्र. स्वामी ओमवेश जी, युवा संन्यासी हरिद्वार ग्रामीण के विधायक स्वामी यतीश्वरानन्द जी, स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी, श्री केवलानन्द जी, स्वामी ओमकारानन्द जी, स्वामी सोम्यानन्द जी, स्वामी सर्वानन्द पिनाहट, आचार्य राजेन्द्र गुरुकुल कालवा आदि संन्यासियों के अतिरिक्त सर्वश्री डॉ. जयदेव वेदालंकार, डॉ. महावीर अग्रवाल, प्रो. रूपकिशोर शास्त्री, डॉ. सोमदेव शतांशु, डॉ. योगेश शास्त्री डॉ. दीनानाथ शर्मा मुख्य अधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी, डॉ. वीरेन्द्र पंवार प्रबन्धक आर्य समाज हरिद्वार, श्री बिरजानन्द दैवकरणी झज्जर, श्री रामपाल शास्त्री अध्यक्ष मानव सेवा प्रतिष्ठान दिल्ली, श्री रणवीर सिंह शास्त्री पूर्व प्रधानाचार्य, डॉ. वेदव्रत आलोक, श्री ओम प्रकाश अग्रवाल सिरसागंज, श्री प्रेम प्रकाश शर्मा मंत्री तपोवन आश्रम देहरादून, श्री विजय कुमार आर्य कीरतपुर, श्री कौशलमुनि फरीदाबाद, श्री बलजीत सिंह आदित्य आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। अन्त्येष्टि में प्रचुर मात्रा में घृत सामग्री आदि प्रयुक्त हुई और पूर्ण वैदिक रीति से वेद मंत्रों के द्वारा आहुतियाँ प्रदान करके स्वामी जी के पार्थिव शरीर को पंचतत्त्व में विलीन कर दिया। स्वामी जी के पार्थिव शरीर को मुखाग्नि उनके उत्तराधिकारी और शिष्य युवा संन्यासी स्वामी मेधानन्द सरस्वती ने दी।

स्वामी दिव्यानन्द जी महाराज की श्रद्धांजलि सभा एवं शांति यज्ञ 31 मई, 2019 को उनके पतंजलि योगधाम ज्वालापुर में आयोजित किया गया जिसमें अनेक गणमान्य महानुभावों ने उन्हें अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। श्रद्धांजलि देने वालों में मुख्य रूप से सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी ओमवेश जी, स्वामी यतीश्वरानन्द जी, स्वामी सोम्यानन्द जी, स्वामी ओंकारानन्द जी, प्रो. रूपकिशोर शास्त्री, डॉ. विनोद चन्द्र विद्यालंकार, डॉ. नवनीत परमार, सहायक मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी, डॉ. मनुदेव शास्त्री, डॉ. अन्नपूर्णा आचार्या कन्या गुरुकुल देहरादून, आर्य भजनोपदेशक पं. सत्यपाल पथिक, आर्य वानप्रस्थ आश्रम के पूर्व अध्यक्ष आचार्य रामकृष्ण शास्त्री, योगधाम के ट्रस्टी डॉ. वेदव्रत आलोक, स्वामी जी के विशेष सेवक श्री रघुवीर आर्य, जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा देहरादून के अध्यक्ष श्री शत्रुघ्न मौर्य आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इनके अतिरिक्त श्री रामखेलावन अध्यक्ष दयानन्द योगधाम फरीदाबाद, श्री शिव कुमार मदान दिल्ली, स्वामी परमानन्द, मा. गुरुदत्त आर्य, श्री ज्ञानेश्वर जी करतारपुर, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री दिल्ली, आचार्य अभयदेव शास्त्री दिल्ली, स्वामी ओम शरणानन्द, श्री आत्मप्रकाश कुम्भाखेड़ा हिसार, श्री प्रवीण जी अग्रवाल, स्वामी भजनानन्द शुक्रताल, श्री अंकित आर्य एडवोकेट अमरोहा, माता सुकीर्ति वानप्रस्था, स्वामी सच्चिदानन्द जी यमुनानगर आदि महानुभाव भी श्रद्धांजलि सभा में उपस्थित रहे। आर्य समाज भोंगला, आर्य समाज बी.एच.ई.एल., आर्य समाज सुवाहेड़ी बिजनौर आदि समाजों के अधिकारियों ने श्रद्धांजलि सभा में भाग लिया।

श्रद्धांजलि सभा का मंच संचालन स्वामी आर्यवेश जी ने किया और अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि स्वामी दिव्यानन्द जी महाराज का देहावसान आर्य जगत की अपूर्णीय क्षति है। योग के क्षेत्र में उनका योगदान सदैव याद किया जायेगा। वे जीवन के आखिरी श्वांस तक योग के प्रचार–प्रसार एवं व्यक्तिगत जीवन में योग साधना को समर्पित रहे।

स्वामी प्रणवानन्द जी ने अपने संस्मरण सुनाते हुए कहा कि स्वामी दिव्यानन्द जी से मेरा परिचय 58 वर्ष पूर्व गुरुकुल झज्जर में हुआ। तबसे लेकर वर्तमान तक उनका मार्ग दर्शन मुझे

शेष पृष्ठ 3 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

दिव्य मातृत्व से ही दिव्य संतान निर्माण संभव

– डॉ. अर्चना प्रिय आर्य (संस्थापिका एवं अध्यक्षा संस्कार जागृति मिशन)

पुत्र का निर्माण करने के कारण ही नारी की संज्ञा माता है। जननी तो हर स्त्री होती है परन्तु माँ के विषय में कहा जाता है ''जो करे पुत्र निर्माण माता सोई'' और इसीलिए महर्षि मनु ने माँ को दस सहस्र आचार्यों के समान कहा है –

mik/;k;ku n'kkpk;l vkpk;k.kk 'kra firkA
lglza rq firUu ekrk xkSjo.kkfrfjP;rsAA

माँ सन्तान के नाम पर कूड़ा, कचरा पैदा कर धरती माँ का बोझ नहीं बढ़ाती थी, बल्कि ऐसी चरित्रवान, जितेन्द्रिय, वीर बहादुर व शक्तिशाली सन्तान का निर्माण करती थी जो भारत माँ के दर्द को दूर करने वाली होती थी। क्योंकि वेदों ने कहा है – ''वीरभोग्या वसुन्धरा'' अर्थात् ये भूमि वीरों के लिए है कायर व कमजोर लोगों के लिए नहीं है। यही कारण था कि पहले यदि नारी अपने को निर्दोष प्रस्तुत करती थी तो इस बात की शपथ लेती थी। कहते हैं कि सप्तमहर्षि माता अरुन्धती सहित यात्रा कर रहे थे। मार्ग में किसी वस्तु की चोरी हो गई। प्रत्येक अपनी सफाई देने लगा। माता अरुन्धती कहती हैं 'जो पाप अयोग्य और दुर्बल सन्तान उत्पन्न करने का होता है वह पाप मुझे लगे, यदि मैंने चोरी की हो।' यहाँ स्पष्ट है कि प्राचीन मातायें अयोग्य और दुर्बल सन्तान पैदा करना महापाप समझती थीं।

योगीराज श्रीकृष्ण जी की वीरता, शौर्य, राजनीतिकता, प्रभुभक्ति, गोमाता प्रेम, सेवाभाव और धर्मशीलता से आप परिचित हैं, परन्तु इसका मूल भी आपको माता देवकी के अनुपम धैर्य, कष्ट, सहिष्णुता, रूप, तप, वीरता, ईश्वर प्रेम और माता यशोदा की लोरियों में देखना होगा। छत्रपति शिवाजी को सिंहगढ़ विजय की प्रेरणा करने वाली माता जीजाबाई थी। ''सिंहगढ़ विजय करो बेटा भगवा ध्वज चलकर फहराओ।' भक्त ध्रुव का निर्माण करने वाली माता सुनीति थी। हनुमान का निर्माण अंजना ने किया, भीष्म पितामह की व्रतनिष्ठा का मूल उनकी माता गंगा की व्रतसाधना में छिपा है। आल्हा ऊदल की वीरता का रहस्य माता देवली देवी की शिक्षायें हैं। गोरा बादल की प्राण संचारी शक्ति माता जवाहरबाई और हताश पुत्र संजय को धिक्कारते हुए पुनः कर्त्तव्य पथ पर आरूढ़ करने वाली वीर माता मदालसा के उदाहरण में सर्वाधिक स्पष्ट हुआ है। वे अपने तीनों पुत्रों विक्रान्त, सुबाहु एवं शत्रुमर्दन को शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि निरंजनोऽसि, संसार माया परिवर्जितोऽसि का उपदेश करके विरक्त बना देती है। चौथे पुत्र अलर्क को भी जब यही उपदेश करने लगी तो राजा चिन्तित हो उठते हैं और कहते हैं, देवि! इसे भी विरक्त बनाकर मेरी वंश परम्परा उच्छेद करने पर क्यों तुली हो? इसे प्रवृत्ति मार्ग में लगाओ और उसके अनुकूल ही उपदेश दो। मदालसा ने पति की आज्ञा मान ली और अलर्क को बचपन में ही व्यवहार शास्त्र का पण्डित बना दिया। उसे राजनीति का पूर्ण ज्ञान कराया। धर्म, अर्थ और काम तीनों शास्त्रों में वह प्रवीण बन गया। बड़े होने पर माता–पिता ने अलर्क को राजगद्दी पर बिठाया और स्वयं वन में तपस्या करने के लिए चले गये। किसी कवि की पंक्तियाँ प्रसंगवश पठनीय हैं –

ekrk dS fl [kk;s i= dk;j vkSj Øwj gksrA
ekrk dS fl [kk;s i= nkrk vkSj 'kwj gksrA
ekrk dS fl [kk;s i= cãpkjh cyoku gksrA
ekrk dS fl [kk;s i= txeS e'kgwj gksrAA

हमारी मातायें, बहनें, आज भी महर्षि दयानन्द, सुभाषचन्द्र बोस, सरदार वल्लभभाई पटेल, सरदार भगत सिंह, लाल बहादुर शास्त्री सरीखें लालों को निर्माण देकर वे अपने महान राष्ट्र को फिर जगद्गुरु बनाने में योगदान दे सकती है। इसके लिए उन्हें ''सन्तति निर्माण शास्त्र'' का अध्ययन करना होगा। गर्भाधान से लेकर उपनयन संस्कार तक इसी विज्ञान का शिक्षण है। मनुस्मृति आदि धर्म शास्त्रों में भी इसके लिए आवश्यक विधान है। गर्भाधान प्रक्रिया के पीछे एक स्वस्थ कल्पना और उत्कृष्ट भावना, रहन–सहन किस प्रकार के चित्रों का अवलोकन किस प्रकार के ग्रन्थों का अध्ययन, बालक को किस–किस प्रकार की लोरियाँ, रहन–सहन आदि किस–किस प्रकार की कहानियाँ, कविताएं, गीत कण्ठस्थ कराना, कैसी स्त्रियों का साथ आदि किस प्रकार का शिष्टाचार सहित सन्तति निर्माण विज्ञान के अनेक विभाग हैं।

हर महान व्यक्तित्व के पीछे एक माँ छिपी है और छिपा है उसका ममत्व। श्रेष्ठ उन्नति के निर्माण हेतु माता का संस्कारित होना देश की आवश्यकता है। इसलिए आज बालिकाओं की शिक्षा इस प्रकार की होनी चाहिए। उसके मन में स्त्रीत्व के प्रति हीन भावना न हो। उसे अपने नारी होने पर गर्व हो तथा वह स्वयं कन्या के प्रति जाग्रत हुई अनावस्था को दूर कर उसमें भावी माता के संस्कारों को भरने के प्रति सजग बने।

खेत में उत्तम फसल प्राप्त करने के लिए बीज डालने के पूर्व खेत को तैयार करना होता है। माँ ही वह खेत है। 'माता निर्माता भवति' माँ ही निर्मात्री शक्ति है। मातायें ही किसी राष्ट्र और जन–जीवन की आधारशिला है, परन्तु अपनी मनोभूमि को ऐसा बनाने के लिए, मानव जीवन के महत्व, ईश्वर भक्ति और मातृभूमि भक्ति के रहस्य को जानने के साथ ही इस युग के महिमामय क्रान्तिदर्शी ऋषि दयानन्द द्वारा लिखित सोलह संस्कारों की वैदिक विधि महत्व और प्रक्रिया को समझना आवश्यक होगा। राम प्रसाद बिस्मिल की माँ ने बचपन से ही अपने बच्चे को स्वामी दयानन्द का यह सन्देश सुनाकर 'गन्दे से गन्दा स्वदेशी राज्य, अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से अच्छा है।' फांसी की रस्सी को चूमने की प्रेरणा दी थी।

आज के युग की सबसे बड़ी समस्या है मानवता से युक्त सच्चे मानव का अकाल। आज यही समझना है कि आदर्श मानवों के इस अकाल को पुरुष नहीं स्त्रियाँ ही दूर कर सकती हैं क्योंकि स्त्री का वास्तविक स्वरूप माता का है और माता निर्माता भवति माता ही राष्ट्र और जीवन की निर्मात्री शक्ति है। 'मातृमान्–पितृमान्, आचार्यवान पुरुषो वेदः' शतपथ ब्राह्मण का यह वचन है। जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवें तभी मनुष्य ज्ञानवान बनता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में लिखा है कि वह सन्तान बड़ी भाग्यवान है जिसके माता–पिता धार्मिक, विद्वान् हों। जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुंचता है उतना किसी से नहीं। जितना माता सन्तानों पर प्रेम और उनका हित करना चाहती है उतना अन्य कोई नहीं करता। इसलिए प्रशस्ता धार्मिक माता यस्य स मातृमान् धन्य वह माता है कि जो गर्भाधान से लेकर जब तक शिक्षा पूरी न हो तब तक सुशीलता का उपदेश करे।

राम प्रसाद बिस्मिल को गोरखपुर की जेल में ब्रिटिश राज्य को उखाड़ने के प्रयत्न में फांसी की सजा दी जा चुकी थी। भारत के गर्वनर जनरल ने क्षमा माँग लेने और भविष्य में वैसा न करने का आश्वासन देने पर फांसी से छुटकारा देने का आश्वासन दे दिया। राम प्रसाद बिस्मिल की फांसी से एक दिन पूर्व उनके पिता उससे मिलने आये और उन्होंने पुत्र प्रेम में विह्वल हो उसे क्षमा मांगने और भविष्य में स्वतंत्रता के संग्राम में न कूदने की मार्मिक अपील की। पाठकों! लेकिन एक आर्यवीर को मृत्यु भयभीत नहीं कर सकती थी। स्वामी दयानन्द के अनुयायी इस बिस्मिल के लिए मृत्यु कोई भय वाली वस्तु नहीं थी। मृत्यु का अर्थ उसकी दृष्टि में था माँ की गोद में सो जाना। छोटा बच्चा दिन भर खिलखिलाता है, हंसता है, रोता है, गिरता है और रात्रि होते ही माँ उसे उठा लेती है यही हाल जीव का है। संसार से जीव को मृत्यु माता उठा लेती है। मृत्यु मानों पर्व है, मृत्यु मानो प्रियतम है, मृत्यु महा निद्रा है, मृत्यु मानो शान्ति है, मृत्यु मानो नवजीवन का आरम्भ है, मृत्यु मानो आनन्द का दर्शन है, मृत्यु मानो पर्व है, मृत्यु मानो प्रियतम के पास जाना है। तब भला यह मृत्यु राम प्रसाद बिस्मिल को कैसे भयभीत कर सकती थी। उसने पिता की प्रार्थना अस्वीकार कर दी। कुछ समय पश्चात् उसकी माँ पहुँची। माँ के पहुँचते ही बिस्मिल ने रोना शुरू कर दिया माँ के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। माँ ने बेटे को फटकारते हुए कहा कि जब मरने से इतना ही डर लगता था तो इस मार्ग को क्यों चुना? माँ के इन वचनों को सुनकर वो बिस्मिल अपनी आंखों से आंसू पोंछते हुए बोला, माँ मैं मृत्यु से डरकर नहीं रो रहा हूँ। मौत का मुझे कोई गम नहीं है परन्तु मैं तो इसलिए रो रहा हूँ कि मरने के बाद मुझे तुझ जैसी बहादुर माँ की गोद कहाँ मिलेगी?

वास्तव में माताओं ने अपने हृदय के तीव्र वेगों से जो चमत्कार किये हैं उनके अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं। माता कौशल्या, माता अंजना, माता मदलसा, माता देवकी, माता यशोदा, जीजाबाई आदि के शत सहस्र उदाहरण है। जिन्होंने सन्तान निर्माण का आदर्श प्रस्तुत कर धन्यता और अमरता प्राप्त की है।

ukjh uj dk fuekZ.k djkA
eu] 0;kl] d".k] jke tSls i=ks dks tuA
ukjh x.k dk vk/kku djs]
irki] f'kok] xkfoUn cuA

महाभारत का उदाहरण हमारे सामने है। वीर अभिमन्यु की माँ सुभद्रा अपने पति अर्जुन से चक्रव्यूह भेदन का ज्ञान प्राप्त करते–करते सो गई। परिणामतः बालक अभिमन्यु का शिक्षण अधूरा रहा और वह चक्रव्यूह से बाहर न निकल सकने के कारण पराजित हुआ। इतिहास साक्षी है कि शिवाजी महाराज को राजमाता जीजाबाई ने गर्भकाल से ही शिक्षण दिया था। उनका उद्देश्य था कि वह बालक गौ–ब्राह्मण प्रतिपालक एवं हिन्दू राष्ट्र का पुनरुत्थान करने वाला बने। इसलिए उन्होंने बालक शिवाजी के चरित्र निर्माण करने वाला संस्कारप्रद वातावरण गर्भकाल से ही उपलब्ध कराया। संत ज्ञानेश्वर की माँ भी अनेक कष्ट सहकर राष्ट्रीय स्वाभिमान का एवं भक्ति से परिपूर्ण बालक का निर्माण किया और समाज हिताय समर्पित कर दिया। 'चिन्ता करितो विश्वाची' यह वाक्य कहने वाला बालक नारायण की माँ ने सूर्य की उपासना करती थी। सूर्योपासक माता राणुबाई ने सूर्यसम दिव्य, तेजस्वी, विश्व की चिन्ता करने वाले सुपुत्र को जन्म दिया। यही बालक स्वामी रामदास के नाम से प्रसिद्ध हुआ। कहने का तात्पर्य है कि ऐसे अनेक उदाहरण हमारे इतिहास के पृष्ठों में छिपे हैं, जिनसे यह स्पष्ट होता है कि माता के प्रयत्नों के परिणामस्वरूप बालक की वैसी ही निर्मित हुई, जैसा वह चाहती थी।

हर महान व्यक्तित्व के पीछे एक माँ छिपी है और छिपा है उसका ममत्व। श्रेष्ठ उन्नति के निर्माण हेतु माता का संस्कारित होना देश की आवश्यकता है। इसलिए आज बालिकाओं की शिक्षा इस प्रकार की होनी चाहिए। उसके मन में स्त्रीत्व के प्रति हीन भावना न हो। उसे अपने नारी होने पर गर्व हो तथा वह स्वयं कन्या के प्रति जाग्रत हुई अनावस्था को दूर कर उसमें भावी माता के संस्कारों को भरने के प्रति सजग बने।

आज की माताओं को विचारना है कि उसे कैसा साहित्य पढ़ना होगा, घर का वातावरण कैसा हो। उसके मन में हृदय में वर्तमान परिस्थिति के अनुसार भव्य दिव्य राष्ट्र की परिकल्पना एवं भक्ति कैसे जाग्रत हो? तभी वह भावी नागरिक को धर्मयुक्त कर्त्तव्य तत्पर एवं राष्ट्र के प्रति सजग बना सकती है। खाओ, पीओ, मस्त रहो। यह अपने देश की संस्कृति में नहीं है। अपनी संस्कृति में पर के लिए अर्थात् समाज, राष्ट्र, परिवार के लिए जीने की अवधारणा है। मातृत्व का यह केवल आज श्रृंगार भोग–विलास के मार्ग से प्राप्त हुआ जीवन का प्रसंग नहीं है, अपितु समझ–बूझकर स्वयं स्वीकारा हुआ एक महान् पवित्रतम क्षण है। यह सच है कि कौशल्या केवल रानी होती और भोग–विलास में मस्त रहकर संतान को जन्म देती तो संतान राम न बनकर कुछ और होती। श्री राम माता कौशल्य के संस्कारों का प्रतिफल है। हमारे देश की माताओं को भोगवादी संस्कृति से दूर रहना होगा। एक रोटी को बांटकर खाने की प्रेरणा माँ ही अन्तःकरण में जाग्रत करती है। जब यहां के नागरिक भोगवाद से दूर रहकर, आर्य तत्वज्ञान को जीवन में उतारकर, स्वार्थविहीन, भ्रष्टाचार मुक्त, दिव्य, तेजस्वी राष्ट्र के निर्माण में क्षमतावान बनेंगे तो देश समुन्नत होगा। यही दिव्य भाव माँ के हृदय में चाहिए। दिव्य मातृत्व, दिव्य नागरिक निर्माण करेगा और नागरिक निर्माण करेंगे समुन्नत राष्ट्र।

nfo;k n'k dh tkx tk;s vxjA
;qx Lo;a gh cny rk pyk tkoxkA

& 52] rkjk/kke dkyksuh] VkÅuf'ki ¼eFkjk½

पृष्ठ 1 का शेष

आर्य जगत के तपोनिष्ठ, योगनिष्ठ एवं ब्रह्मनिष्ठ संन्यासी स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती का निधन आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति है

सदैव प्राप्त होता रहा। उनके निधन से व्यक्तिगत रूप से मैं अत्यन्त दुःखी हूँ और भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि उनकी आत्मा को शांति एवं सद्गति मिले।

स्वामी ओमवेश जी ने अपनी श्रद्धांजलि में कहा कि स्वामी दिव्यानन्द जी मेरे विशेष आत्मीय थे। हम दोनों गुरुकुल कांगड़ी में दो वर्ष तक एक कमरे में रहे और बहुत निकट से उन्हें देखने, समझने का अवसर मुझे मिला। बाद में सन् 1983 में स्वामी इन्द्रवेश जी की अध्यक्षता में आयोजित महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह रामलीला मैदान नई दिल्ली के अवसर पर हम दोनों ने साथ–साथ संन्यास की दीक्षा ली और हमारी आत्मीयता और प्रगाढ़ हो गई। निःसंदेह ऐसा सौम्य स्वभाव एवं तपस्या की मूर्ति बहुत कम देखने को मिलते हैं।

स्वामी यतीश्वरानन्द जी ने स्वामी दिव्यानन्द जी को एक सात्विक, आध्यात्मिक एवं योगी के रूप में स्मरण किया। उन्होंने कहा कि वे किसी भी व्यक्ति से द्वेष नहीं करते थे, बल्कि सदैव प्रसन्न मुद्रा में रहते हुए सबके साथ आत्मीयता एवं स्नेह पूर्ण व्यवहार करते थे। हमे सदैव उनका आशीर्वाद प्राप्त होता रहा। निःसंदेह उनके जाने से जो स्थान रिक्त हुआ है उसको निकट भविष्य में पूर्ति कर पाना सम्भव नहीं है।

डॉ. वेदव्रत आलोक ने अपनी श्रद्धांजलि में बड़े दुःख भरे शब्दों में कहा कि मुझे स्वामी दिव्यानन्द जी से शिकायत है कि वे मुझसे पहले क्यों चले गये। किन्तु ईश्वर का नियम अटल है उसके आगे नतमस्तक होने के सिवाय हम कुछ नहीं कर सकते।

गुरुकुल कांगड़ी वेद विभाग के अध्यक्ष प्रो. रूप किशोर शास्त्री ने स्वामी दिव्यानन्द जी को आर्य समाज के एक योगनिष्ठ संन्यासी के रूप में प्रतिष्ठित विद्वान बताते हुए कहा कि आज उनके जीवन से हम सभी को योगाभ्यास करने की प्रेरणा लेनी चाहिए।

डॉ. विनोदचन्द्र अग्रवाल ने भी उनके सौम्य स्वभाव, साधना एवं तप से युक्त जीवन की प्रशंसा करते हुए एक प्रेरणादायक व्यक्तित्व बताया।

स्वामी दिव्यानन्द जी के उत्तराधिकारी एवं उनके शिष्य स्वामी मेधानन्द जी ने स्वामी जी के निधन को आर्य समाज की और पतंजलि योगधाम की अपूर्णीय क्षति बताते हुए कहा कि मैं पूरी निष्ठा एवं समर्पण के साथ योगधाम को स्वामी दिव्यानन्द जी के पद्चिन्हों पर चलकर आगे बढ़ाऊँगा और प्रयास करूंगा कि स्वामी दिव्यानन्द जी द्वारा चलाई गई गतिविधियों को आश्रम में नियमित चला सकूँ। आप सबके सहयोग की मुझे अपेक्षा रहेगी और मुझे पूरा विश्वास है कि आप सभी इस संस्था को और अधिक गतिशील बनाने में अपना योगदान देते रहेंगे। स्वामी जी ने मुझे संन्यास की दीक्षा देकर जो दायित्व मेरे कंधों पर डाला है ईश्वर को साक्षी करके मैं यह कहना चाहता हूँ कि मैं अपने कर्त्तव्य का पूरी पवित्रता एवं सात्विकता से निर्वहन करूंगा। श्रद्धांजलि सभा के अन्त में विभिन्न संस्थाओं द्वारा भेजे गये शोक प्रस्ताव भी पढ़कर सुनाये गये और स्वामी मेधानन्द सरस्वती को सभी संन्यासियों, विद्वानों, योगधाम के न्यासियों ने मिलकर एक शॉल भेंट करके उन्हें योगधाम के संचालक के रूप में प्रतिष्ठित किया।

DAILY PRAYER

- Mahatma Narayan Swami

Ethical Value of Prayer

Man is considered to be the highest and loftiest creation in the scale of evolution.

He is born to perform duties in distinguishing him from animals at every step. These duties are three-fold.

1. Man's duties towards himself.
2. Man's duties towards others.
3. Man's duties towards God.

All These duties are epitomised in the "Daily Prayer" called the Brahma Yajna or Sandhya, which he is enjoined to perform twice daily, in the morning and evening, to give expression to his innermost feelings, hankerings and longings Prayer is, as a matter of fact, a universal instinct. It appears as if it has been wrought into human nature. Man prays because he cannot help praying. He derives out of prayer a certain satisfaction which he can derive from no other human activity.

The greatest value of prayer lies in its educational and moral effect, in the spiritual discipline which is must to those who pray. Prayer is a blessing in itself. It is undoubtedly a means of devloping human beings in the highest and truest sense. perhaps, there is no means to moral culture superior to the belief in and exercise of prayer. One who prays earnestly does immediately feel within himself or herself the quickening and refining influence of prayer.

The Object to Prayer

The object of prayer is happiness. Man always hankers after happiness. But happiness is not the result of idle hankering it is an achievement through strenuous living of the life of a good citizen. Man strives for happiness. He makes it the goal of his ambition and activities. It is his Summum bonum. To this end he prays. The first hymn given below is a prayer to that end.

Prayerful Mood

prayerful mood is the result of the inner recognition of the limits of our own powers. Man is baffled by the buffets of this world. His difficulties drive him to despair. There are so many contradictions in his life that he in his individual capacity, finds himself unable to solve them. Downcast and depressed he turns round and tries. He knocks at the door of a Greater Self—the Supreme Being—the Almighty God Whom his faith prescribes to be shelter and refuge for all rejected and dejected human beings. This attitude induces a prayerful mood.

When you are going to sit down for prayer, see that you draw yourself, that spiritual pranayama, Consecrate yourself be filled with the presence of God. Yield yourself to Him not with a passive acquiesence, a sentimental quietism but with an earnest, energetic direction of all your faculties to achieve something supreme through your contact with the all-embracing Spirtual Presence. When you bring yourself in this mood, you acquire the right, the privilege and the incentive to prayer offered in this mood will be effective, fruitful and regenerative.

ACHMAN MANTRA

Prayer for Peace and Happiness

(Place some water in the right palm and after reciting the following mantra do achman (sip it). Do this three times).

1. Om shanno devi rabhishtaya apobhavantu pitaye Shanyo rabhisravantu nah.

May the supreme Being —the giver of light, the All-Pervading Lord, blissful to us in the attainment of our desired end, i.e. happiness! May He shower on us His Peace and Happiness !

In this hymn we have our goal before us. We picture before or mind's eye the object we pray for—the end that we strive to attain. But we know, Happiness does not come to us through idle wishing, through passive brooding or inactive longing. It is to be achieved through struggle, active striving and strenuous living. For that we need performance of certain duties-duties to ourselves and duties to other.

Man's Duties Towards Himself

Our duty to ourselves consists of the great preparation for the supreme goal.

Our 'self' of body, mind and spirit. It is spirit that functions through the body and mind. All our success in life depends upon this right and correct functioning which requires regular discipline both of body and mind. Body, as a matter of fact, is seat of mind and its health contributes to the health of mind itself. Body consists of sense organs and its health and efficiency means the health and efficiency of these sense-organs individually as we recite the following hymn, touching them, and think over how best we can utilise them in our personal service and in the service of our fellowmen around us.

Anga sparsha mantra

Prayer for Wellbeing and Strength

(Take some water in the left palm. Dip the two middle fingers of the right hand into the water and touch the respective organs as the following mantras are recited.

2. Om Vak vak (both sides of the mouth)
Om Pranah Pranah (both nostrills)
Om Chakshuh Chakshuh (both eyes)
Om Shrotram Shrotram (both ears)
Om Nabhih (naval cord)
Om hridayam (heart)
Om Kanthah (throat)
Om Shirah (head)
Om Bahubhyam Yashobalam (both Shoulders)
Om Karatalakara Prishthe (both plams, front and back)

Blessed be Thy name O Lord! May thou strengthen and bless my organs of speech, my respiratory system, my organs of sight and hearing, my centres of love, feeling and heart, my throat and brain, my arms and hands, both for personal end and for the good of my fellowmen amidst whom I live !

It is to be distincitly understood that happiness results from the proper use of the sense-organs. Their strength is therefore, the first condition of happiness. God is invoked in the above hymn to come to our aid and bless our organs. We have to mentally, go over each organ, think of its use and misuse with a view to adopt the former and avoid the latter.

MARJANA MANTRA

Prayer for Purity of Body

Next in order is the purificatory hymn. The recitation of which urges the devotee to rouse each sense-organ to its normal function or activity as it enjoins a prayer for the correct and right use of each bodily organ. One has always to remember that our miseries are of our own making and those who want to avoid them must first control their senses and guide them unto nobler, higher and purer purposes.

Take again some water in the left palm and, dipping the two middle fingers of the right hand, sprinkle water over the various organs with the recital of the undermentioned mantras as indicated hereunder).

3. Om Bhuh Punatu Shrasi (head)
Om Swah Punatu Kanthe (throat)
Om Mahah Punatu Hridaye (heart)
Om Janah Punatu Nabhyam (naval cord)
Om Tapah Punatu Padeyoh (feet)
Om Satyam Punatu Punah Shirast (head)
Om Kham brahma Punatu Sarvatra (the whole body)

May the Supreme Being, the Great Lord, the Source of Energy and Light, purity and strengthen my brain (powers of understanding), my eyes (powers of vision). my throat and my speech, my powers of heart, my procreative powers, my legs (feet) and the entire body to perform its no mal functions and activity in the service of Humanity !

The devotee is reminded in this hymn, that the body is the Temple of the Lord and its organs and powers are to kept in the highest efficiency. One is to devote his entire energy to the building up of a sound mind in a sound body. The secret of life lies in this and this alone Those who believe prayer to be a passive contemplation must understand that the Vedic prayer is active in its nature and prescribes a life of ceaseless activity both in his individual capacity and as well as in the capacity of his being a member of his community. Prayer, like education, aims at good citizenship.

In these hymns we pray for the strength of our bodily organs and also for their keeping in strict discipline Strength with discipline leads us to glory, but without discipline it drives us to despair and destruction. A man with strong and healthy organs can glorify God by leading a life of discipline and self-control. Injustice and tyranny are born of indiscipline But glory and good name come to those who make the best use of their strength under the laws of strict discipline and selfcontrol.

We pray to God to allow us a store of strength to strengthen these sense-organs and make them our allies. Our life should become miserable if our organs do not act as our allies but act as our enemies. Our hands and feet, our eyes and ears, while playing the role of an enemy bring havoc to us. Erring organs lead us hellward. While they act as our allies they lead us heavenward.

Our Prayer for bodily strength and vigour will be effec-tive only when we see that :—

1. We keep our sense-organs strong and unerring.
2. We keep them always engaged in healthy activities.
3. We keep them pure and clean by withdrawing them from unclean and profane pursuits.

आर्य समाज की महान विभूति, त्यागी, तपस्वी संन्यासी गुरुकुल धीरणवास, जिला–हिसार के कुलपति

स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज भी हुए दिवंगत

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने दी मुखाग्नि

हजारों आर्यजनों ने नम आंखों से दी अन्तिम विदाई

गुरुकुल के प्रधान श्री युद्धवीर सिंह आर्य की अध्यक्षता में 6 जून, 2019 को आयोजित हुई श्रद्धांजलि सभा

आर्य समाज की महान विभूति, त्यागी, तपस्वी, वीतराग संन्यासी स्वामी सर्वदानन्द महाराज जी का गत 3 जून, 2019 को जिन्दल अस्पताल हिसार में देहावसान हो गया, वे 96 वर्ष के थे। अन्तिम श्वांस तक गायत्री मंत्र का जाप, संन्ध्या, ओ३म् स्मरण आदि में रत आगन्तुकों से प्रसन्नता के साथ मिलकर धन्यवाद ज्ञापित करते हुए वे दिवंगत हुए स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज ने एक अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत कर दिया। पेट के एक सामान्य आपरेशन के बाद अस्पताल में दाखिल स्वामी जी महाराज अन्तिम समय तक उनके दर्शन करने वाले महानुभावों से मिलने–जुलने एवं प्रातः सायं अपनी दिनचर्या करने, हर समय ओ३म् स्मरण एवं गायत्री मंत्र का जाप करने में व्यस्त स्वामी जी अचानक 3 जून, 2019 को सायं 9.15 बजे स्वर्ग सिधार गये। प्रत्येक व्यक्ति को आश्चर्य हुआ कि जीवन के अन्तिम समय में भी इस प्रकार से स्वामी जी आत्मा का चिन्तन–मनन एवं गायत्री जप करते हुए उस प्रभु के साथ सम्बद्ध हो चुके हैं और आने वालों से मिलते समय सामान्य मुस्कराते हुए अभिवादन स्वीकार करते हैं यह उनकी अवस्था निःसंदेह एक उच्चकोटि के तपस्वी की ही हो सकती है। स्वामी सर्वदानन्द जी फौज से सूबेदार के पद से रिटायर होने के पश्चात् वानप्रस्थ आश्रम में दीक्षित हुए और चेतनदेव बन गये। वानप्रस्थ चेतनदेव जी ने लगभग 42 वर्ष पूर्व हिसार जिले के ग्राम धीरणवास में गुरुकुल की स्थापना करके अपना सम्पूर्ण जीवन उस गुरुकुल के संचालन में समर्पित कर दिया। बाद में वानप्रस्थ चेतनदेव ने आर्य जगत् के महान संन्यासी स्वामी भीष्म जी महाराज द्वारा संन्यास की दीक्षा लेकर स्वामी सर्वदानन्द जी बनकर अपने कार्य को जारी रखा। स्वामी सर्वदानन्द जी की विशेषता यह रही कि सेना से आने के पश्चात् उन्होंने गुरुकुल और आर्य समाज के प्रचार–प्रसार के अलावा और कुछ नहीं देखा। परिवार से पूरी तरह नाता तोड़ा दिया। उन्हें मिलने वाली पेंशन जो लगभग 40 हजार रुपये मासिक थी उसे भी गुरुकुल या आर्य समाज के प्रचार में वे खर्च करते थे। उनका जीवन अत्यन्त साधनापूर्ण था। वे हमेशा कार्य में व्यस्त रहते थे। गुरुकुल के लिए धनसंग्रह, अन्न संग्रह एवं गुरुकुल की अन्य व्यवस्थाओं को भी तन्मयता से संभालते थे। पूरे क्षेत्र में प्रचार–प्रसार के लिए भी वे अपना समय लगाते रहते थे। हिसार जिले में शराबबन्दी, गौहत्याबन्दी या बेटी बचाओ अभियान जैसे कार्यक्रमों वे बढ़–चढ़कर भाग लेते थे और तन–मन–धन से अपना योगदान देते थे। उनके जीवन में सात्विकता, पवित्रता एवं आध्यात्मिकता चरितार्थ हो चुकी थी। उनका जीवन अत्यन्त पारदर्शी एवं सत्य पर आधारित था। बड़े से बड़े व्यक्ति के समक्ष भी वे सत्य कहने से कभी नहीं झिझकते थे। बच्चों में बच्चों के समान, युवकों में युवकों के समान और बुजुर्गों में बुजुर्गों के समान व्यवहार करने एवं अपनी बात कहने में वे अत्यन्त दक्ष थे। लगभग 42 वर्ष पूर्व जिस गुरुकुल की उन्होंने स्थापना की थी वह आज एक विशाल संस्था के रूप में विकसित हो चुका है। उस इलाके के लोग गुरुकुल से विशेष प्रेरणा लेते हैं। उनकी लोकप्रियता अत्यन्त विख्यात है और इसका सबूत उनकी अन्त्येष्टि के समय एकत्रित हुए हजारों नम आंखों ने स्वयं दिया। स्वामी जी महाराज के पार्थिव शरीर को 4 जून, 2019 को गुरुकुल धीरणवास के प्रांगण में अग्नि को समर्पित कर दिया गया। गुरुकुल की प्रबन्ध कारिणी ने निश्चय किया कि स्वामी जी एक वीतराग संन्यासी थे और पूर्ण वैराग्य उनके आचरण में था। अतः उनकी अन्त्येष्टि में संन्यासी के रूप में और पद के नाते से सर्वोच्च पद पर विराजमान सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी अन्त्येष्टि में मुखाग्नि दें। इसी भाव से सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने स्वयं अन्त्येष्टि में सम्मिलित होकर उनके चिता को मुखाग्नि दी और हजारों नम आखों ने उन्हें अन्तिम विदाई दी। अन्त्येष्टि के अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त हरियाणा नशाबन्दी परिषद् के अध्यक्ष स्वामी रामवेश जी, गुरुकुल झज्जर के आचार्य विजयपाल, गुरुकुल कालवा के आचार्य राजेन्द्र जी, हरियाणा के पूर्व वित्तमंत्री एवं गृहमंत्री प्रो. सम्पत सिंह, हरियाणा सरकार के पूर्व मंत्री एवं आर्य समाज हिसार के प्रधान चौ. हरिसिंह सैनी, पूर्व राज्यसभा सदस्य पं. रामजीलाल आर्य, वर्तमान राज्यसभा सदस्य श्री डी.डी. वत्स, वर्तमान विधायक श्री रणवीर सिंह गंगवा, जे.जे.पी. के युवा नेता श्री दिग्विजय चौटाला, चौ. रणवीर सिंह, श्री धर्मवीर सिंह गोयत, श्री दिलबाग सिंह हुड्डा, हरियाणा गौसेवा संघ के अध्यक्ष श्री शमशेर सिंह आर्य, आर्य समाज सिरसा के प्रधान श्री अशोक वर्मा व संरक्षक श्री जगदीश सींवर, आर्य समाज फतेहाबाद के प्रधान श्री बंशीलाल आर्य, गुरुकुल के प्रधान श्री युद्धवीर सिंह आर्य, पूर्व प्रधान श्री इन्द्रजीत आर्य, पूर्व प्रधान चौ. बदलूराम आर्य, कोषाध्यक्ष श्री बजरंगलाल गोयल, मंत्री श्री नन्दराम सांगवान, ब्रह्म विद्यालय हिसार के आचार्य डॉ. प्रमोद, गुरुकुल आर्यनगर के कुलपति आचार्य रामस्वरूप, मुख्याधिष्ठाता श्री मानसिंह पाठक, जिला आर्य युवक परिषद् हिसार के प्रधान श्री दलबीर सिंह आर्य, श्री जयवीर सिंह सोनी मुकलान, मा. हरि सिंह, चौ. सूबे सिंह आर्य मुकलान, श्री बलजीत सिंह आर्य कुलपति कन्या गुरुकुल डोभी, श्री सत्यपाल अग्रवाल पत्रकार हिसार, स्वाभिमान हरियाणा ट्रस्ट के प्रधान श्री ईश कुमार आर्य, श्री परमजीत सिंह शास्त्री कन्या गुरुकुल डोभी, डॉ. अनूप सिंह आर्य, आचार्य देवव्रत शास्त्री कन्या गुरुकुल डोभी, श्री ताराचन्द्र आर्य, श्री महेन्द्र सिंह आर्य श्री धर्मसिंह आर्य एवं श्री सीताराम आर्य आर्यनगर, श्री रमेश आर्य, श्री अली आर्य, श्री चतर सिंह, श्री यशपाल कालीरावण रावलवास खुर्द, श्री शोभाचन्द्र आर्य, श्री जगदीश आर्य, श्री महावीर सिंह आर्य रिटायर्ड तहसीलदार एवं गुरुकुल धीरणवास के स्नातक मण्डल एवं सदस्य आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। गुरुकुल के प्रधानाचार्य श्री राजमल ढाका एवं मुख्य व्यवस्थापक श्री नत्थू सिंह आर्य ने अपने सभी सहयोगी अध्यापकों एवं कार्यकर्ताओं को साथ लेकर अन्त्येष्टि की सम्पूर्ण व्यवस्था को बहुत ही अच्छी प्रकार से संभाला।

विदित हो कि अस्पताल में स्वामी जी जब उपचाराधीन थे तो उनकी सेवा में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं आने दी गई। स्वयं गुरुकुल के प्रधान चौ. युद्धवीर सिंह व पूर्व प्रधान श्री इन्द्रजीत सिंह आर्य निरन्तर उनकी देखरेख में 24 घंटे सचेत रहे। और सभी कार्यकर्ताओं ने इसमें अपना पूरा योगदान दिया।

स्वामी सर्वदानन्द जी की श्रद्धांजलि सभा 6 जून, 2019 को गुरुकुल प्रांगण में आयोजित की गई। जिसकी अध्यक्षता गुरुकुल के प्रधान श्री युद्धवीर सिंह आर्य ने की। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी, युवा संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी, आचार्य रामस्वरूप शास्त्री जी, प्रो. ओमकुमार आर्य जी ने आध्यात्मिक प्रवचन देकर उपस्थित श्रद्धालुजन का मार्गदर्शन किया तथा दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। युवा विद्वान् श्री सूर्यदेव वेदांशु ने सुन्दर गीत सुनाकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। मंच का सुन्दर संचालन युवा विद्वान् आचार्य देवदत्त शास्त्री ने किया। श्रद्धांजलि सभा से पूर्व आचार्य देवदत्त शास्त्री के पौरोहित्य में शांति यज्ञ का आयोजन गुरुकुल की यज्ञशाला में किया गया।

प्रेरणा की बात यह रही कि स्वामी जी के अन्त्येष्टि में विपुल मात्रा में घी, सामग्री एवं गोले और अन्य आवश्यक सामग्री समिधा आदि की सम्पूर्ण व्यवस्था पर 32,400 रुपये व्यय हुआ और इसका भुगतान गुरुकुल के प्रधान श्री युद्धवीर सिंह आर्य ने अपनी ओर से करके स्वामी जी को श्रद्धांजलि दी वहीं गुरुकुल का विशेष सहयोग किया। श्रद्धांजलि सभा में वरिष्ठ संन्यासियों के अतिरिक्त सर्वश्री चौ. हरिसिंह सैनी, प्रो. सम्पत सिंह, चौ. रणधीर सिंह, चौ. धर्मवीर गोयत, सेठ बजरंग लाल गोयल, जिला वेद प्रचार मण्डल के अध्यक्ष श्री रामकुमार आर्य, आचार्य बलजीत सिंह आर्य कुलपति कन्या गुरुकुल डोभी, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के जिलाध्यक्ष श्री दलबीर सिंह आर्य आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

जनहित विकास परिषद् हरियाणा के तत्वावधान में पर्यावरण दिवस के अवसर पर किया गया भव्य आयोजन

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य वक्ता के रूप में हुए सम्मिलित

5 जून, 2019 को पर्यावरण दिवस के अवसर पर जनहित विकास परिषद् हरियाणा के तत्वावधान में पर्यावरण बचाओ समारोह का भव्य आयोजन जयन्ती पार्क, जीन्द में किया गया। इस सार्वजनिक कार्यक्रम में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने मुख्य वक्ता के रूप में सम्मिलित होकर पर्यावरण रक्षा के सम्बन्ध में अपना प्रभावशाली व्याख्यान देकर कार्यकर्ताओं को विशेष प्रेरणा दी। उनके अतिरिक्त नशाबन्दी परिषद् हरियाणा के अध्यक्ष स्वामी रामवेश जी ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। सर्वप्रथम शांतिधर्मी पत्रिका के सम्पादक श्री सहदेव समर्पित के पौरोहित्य में यज्ञ किया गया, उसके पश्चात् स्वामी रामवेश जी व स्वामी आर्यवेश जी के व्याख्यान हुए।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने पर्यावरण के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जल, जंगल और जमीन हमारे जीवन के मुख्य आधार हैं। इसी प्रकार वायु और आकाश भी हमारे देवता हैं। प्रकृति के इन पांच देवताओं को प्रदूषित करना जीवन के साथ खिलवाड़ करना है। यदि वायु शुद्ध नहीं होगा तो हम जीवित नहीं रह सकते। यदि जल शुद्ध नहीं होगा तो हम रोगग्रस्त होकर दुःख पायेंगे और इसी प्रकार पृथ्वी और आकाश को भी प्रदूषण मुक्त करना अत्यन्त आवश्यक है। स्वामी जी ने कहा कि पर्यावरण बचाने के लिए और प्रदूषण को समाप्त करने के लिए पेड़ों और वनस्पतियों की सुरक्षा उतनी ही आवश्यक है जितना जल, वायु तथा पृथ्वी को साफ–सुथरा रखना। जितने अधिक पेड़ होंगे उतना ही शुद्ध वातावरण हमको प्राप्त होगा। स्वामी जी ने कहा कि आज दुर्भाग्य है कि लोग पर्यावरण के प्रति उदासीन हैं। दिन–प्रतिदिन प्रदूषण निरन्तर बढ़ता हुआ दिखाई देता है। पृथ्वी पर जगह–जगह गन्दगी के ढेर लगे रहते हैं। वायु में छोड़ी जा रही गैसें उसे प्रदूषित कर रही हैं। हमारी नदियों तथा तालाबों का पानी भी बेहद प्रदूषित हो चुका है। प्रदूषण के इस प्रवाह में यू.एन.ओ. की रिपोर्ट के अनुसार माँस उद्योग का सर्वाधिक प्रभाव है। तथ्यों के अनुसार प्रतिदिन 100 करोड़ पशु–पक्षी मारे जाते हैं और उन्हें खाने के लिए आग पर पकाते समय जो प्रदूषण फैलता है वह जमीन, समुद्र और आकाश में चलने वाले यातायात के साधनों से उतना प्रदूषण नहीं फैलाता जितना माँस उद्योग से फैलता है। स्वामी जी ने कहा कि मनुष्य को जीवित रहने के लिए इन समस्त जीव–जन्तुओं, पशु–पक्षियों, पेड़–पौधों, वनस्पतियों, जल, वायु, पृथ्वी तथा आकाश आदि की अत्यन्त आवश्यकता है। अतः यह उसके अभिन्न सहयोगी हैं और इनकी सुरक्षा उसके लिए अत्यन्त आवश्यक है। अतः पर्यावरण दिवस के अवसर पर हम सभी को यह संकल्प लेना चाहिए कि हम सब अधिक से अधिक पेड़–पौधे लगायें तथा स्वच्छता एवं पर्यावरण रक्षा के लिए सजग हों। स्वामी आर्यवेश जी ने अपने वक्तव्य को और विस्तार देते हुए यज्ञ के महत्त्व पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि प्रत्येक मनुष्य अपने शरीर से निरन्तर गन्दगी छोड़ता रहता है। वह केवल मल–मूत्र के द्वारा ही पृथ्वी तथा वायु को गन्दा नहीं करता अपितु उसके शरीर के प्रत्येक अंग से निकलने वाला मैल, पसीना, कार्बन डाईआक्साईड गैस भी प्रदूषण फैलाती है। अतः प्रत्येक मनुष्य का दायित्व है कि उसके द्वारा फैलाये जा रहे प्रदूषण को मिटाने के लिए प्रतिदिन यज्ञ करे। यज्ञ एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा पूरे वायुमण्डल को प्रदूषण मुक्त किया जा सकता है। स्वामी जी ने जनहित विकास परिषद् के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं को इस अति महत्त्वाकांक्षी कार्यक्रम के लिए बधाई दी तथा उत्साहित किया। उन्होंने इस सम्पूर्ण कार्यक्रम के आयोजक और पर्यावरण रक्षा के पुरोधा श्री केवल सिंह जुलानी का विशेष आभार व्यक्त किया। स्वामी जी ने इस अवसर पर अन्य कार्यकर्ताओं को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित भी किया।

जनहित विकास परिषद् की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए श्री जुलानी ने बताया कि वे लोगों को निःशुल्क बीज एवं पौधे बांटते हैं तथा पेड़ लगाने के लिए प्रेरित करते हैं और पक्षियों को पानी पिलाने के लिए मिट्टी के बर्तन निःशुल्क भेंट करते हैं। उन्होंने कहा कि इस कार्य में उन्हें लोगों का भरपूर सहयोग मिलता है और वे हजारों पेड़ लगाकर पर्यावरण बचाने के लिए कृत संकल्प हैं। इस कार्यक्रम के आयोजन में श्री केवल सिंह जुलानी के अतिरिक्त अध्यक्ष श्री प्रदीप बड़ौदी, उपाध्यक्ष श्री मंगल सिंह, महामंत्री श्री सत्यवान सांगवान के अतिरिक्त डॉ. राज आर्य, श्रीमती सुमन आर्या, श्री हरपाल मौर्य, श्री धर्मराज, श्री जगफूल सिंह ढिल्लो, श्री ऋषिपाल सिंह, श्री सुरेन्द्र खटकड़, श्री रामचन्द्र सगतपुरा आदि का भी विशेष सहयोग रहा।

कार्यक्रम के अन्त में सभी को पक्षियों को पानी पिलाने वाले मिट्टी के बर्तन तथा विविध पौधों के बीज निःशुल्क बांटे गये और शांति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

ओ३म्

स्वामी रुद्रवेश भजनोपदेशक महाविद्यालय

स्थान :– गुरु ब्रह्मानन्द आश्रम स्कीदों–126112, जीन्द (हरियाणा)

ईमेल :– sswaminityanand@gmail.com

महर्षि दयानन्द सरस्वती

गुरु ब्रह्मानन्द

स्वामी भीष्म

स्वामी रुद्रवेश

आपको जानकर अति हर्ष होगा कि आजादी आन्दोलन के महान कवि एवं वेद प्रचारक (गायक) स्वामी भीष्म जी महाराज के सुयोग्य एवं गायक शिष्य श्रद्धेय स्वामी रुद्रवेश जी के नाम (स्मृति) में एक भजनोपदेशक महाविद्यालय सफीदों, जीन्द में प्रारम्भ किया जा रहा है।

आर्य जगत् में लम्बे समय से भजनोपदेशक विद्यालय की कमी आर्यों के हृदय में खटक रही है, हमने आपके विश्वास और सहयोग के बल पर इस अति महत्त्वपूर्ण कार्य को पूर्ण करने का दृढ़ संकल्प लेकर यह पुनीत कार्यक्रम प्रारम्भ किया है। प्रवेश प्रारम्भ हो चुका है, स्थान सीमित है, शीघ्र सम्पर्क करें।

इस भजनोपदेशक महाविद्यालय का उद्घाटन समारोह गुरु पूर्णिमा 16 जुलाई, 2019 को प्रातः 9 बजे से 2 बजे तक रहेगा, जिसमें आर्य समाज के राष्ट्रीय विद्वान्, आर्य संन्यासी एवं नेता पहुँच रहे हैं। सभी सक्रिय कार्यकर्ता सादर आमंत्रित हैं।

निवेदक

ब्रह्मचारी रामस्वरूप
प्रधान
9416062288

स्वामी नित्यानन्द
संचालक
8053662657

पं. रामनिवास आर्य भजनोपदेशक
संयोजक
9416437317

आर्य समाज का चौथा नियम

सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

व्याख्या :– हम प्रायः देखते हैं जो सत्यवादी होता है वह सत्य परक बात का चाहने वाला हो जाता है। असत्य बात अथवा वस्तु को वह अपने मन से ही निकाल देता है। सत्य की परिधि में ही वह व्यक्ति रहता आया है अतः वह सत्यवादी सदा–सदा के लिए हो जाता है। वह व्यक्ति सत्य के ग्रहण करने में ही आनन्द का अनुभव करता है। यदि वह झूठ बोलकर, छल करके वस्तुएं या रुपये–पैसे ठगता है तो समझो उसकी ईमानदारी को ग्रहण लग गया। वह एक बार किसी को ठगेगा झूठ बोलकर किन्तु वह पकड़ में अवश्य आयेगा, कभी न कभी तो। ऐसा व्यक्ति जो आत्मा की आवाज सुनता है तो वह अपनी नीयत से नहीं डिगता यानि वह सत्य का ही आग्रह करेगा, सत्य का ही पक्ष लेगा। तथाकथित मनुष्य को सदैव प्रयत्न करना चाहिए कि वह सत्य ही बोलेगा और असत्य के मार्ग पर किंचित मात्र भी नहीं चलेगा।

व्यक्ति को सत्य को धारण करने में असत्य का परित्याग तो अवश्य करना पड़ेगा। असत्य को छोड़ने में अमुक व्यक्ति तैयार रहे वह अपनी स्थिर मर्यादा को किंचित भी कलंकित न करे। असत्य को छोड़ने में उसे सर्वदा उद्यत यानी प्रस्तुत रहना चाहिए।

यदि अमुक व्यक्ति ने सत्य और असत्य के पक्षों को देखभाल सत्य के पक्ष पर ही अपनी आत्मा की पुकार सुनी तो निश्चित ही उसकी आत्मा महान होती चली जायेगी। उसे अपनी दिनचर्या में अद्‌भुत आनन्द आता चला जायेगा। इसके विपरीत असत्य पक्ष का धारक अपनी आत्मा को धोखा ही देता हुआ थोथा (खोखला) ही रह जायेगा। क्योंकि वह असत्यवादी है। सत्य की ओर चलने के प्रयास करता रहे, प्रयासरत रहते–रहते वह सार्थक अडिग उन्त मार्गीय कहलाने लगेगी। उसकी आत्मा उन्नत हो जायेगी। सत्य को ग्रहण करना और असत्य के छोड़ने में उस व्यक्ति को एक अनुपम आनन्द मिलेगा वह अनुभव करेगा और दृढ़ प्रतिज्ञा भी कि वह सत्य के प्रति आग्रही उन्मुख और असत्य के प्रति त्याज्य वृत्ति को लिए हुए है।

स्वामी दयानन्द मथुरा में व्याकरण के सूर्य के रूप में विख्यात स्वामी विरजानन्द के गुरुकुल में अध्ययनशील अपने ब्रह्मचर्य आश्रम को सुशोभित कर रहे थे। जो भी उन्हें पढ़ा दिया जाता उसे आचार्य (गुरुवर) बिरजानन्द सुनते थे और स्वामी दयानन्द की प्राज्ञता पर प्रशंसा करते हुए बहुत गौरवान्वित थे। अन्य छात्र जलते थे। एक दिन की घटना कि स्वामी बिरजानन्द का कूड़े पर पैर पड़ गया, गुरु जी क्रोधित हुए और दयानन्द को पुकारा। ''दयानन्द!'' दयानन्द गुरुवर के समक्ष विनीतभाव से खड़ा था गुरुवर ने बड़ी क्षिप्र गति से तीन चार बेंत दयानन्द के हाथों पर और पीठ पर मारते हुए कूड़े को बाहर करने की हिदायत दिये जा रहे थे। स्वामी बिरजानन्द हांफने लगे थे। तभी तत्क्षण स्वामी दयानन्द झुककर स्वामी बिरजानन्द के हाथों को सहलाने लगे 'गुरुवर! ब्रह्मचर्य की तपस्या से मेरा तो शरीर बज्र से भी अधिक कठोर बन गया है – मुझे आपके हाथों को सहलाने दो जो दुखने लगे होंगे।

तभी एक अन्य ब्रह्मचारी की आवाज आई – यह कूड़ा तो दयानन्द का नहीं था वह तो अपना बाहर डाल आया था। यह तो किसी और का था। उसने झूठ बोला।'

बिरजानन्द के हाथों को सहलाते हुए बिरजानन्द की आंखों से अचानक दो गर्म–गर्म आंसू दयानन्द के हाथों पर आ गिरे, गुरुवर बुद–बुदाये दयानन्द तू कितना सहनशील, क्षमावान, सत्यवादी है रे, है कोई तेरे जैसा? स्वामी बिरजानन्द दयानन्द के चेहरे को एकटक देखे जा रहे थे। अन्ध होते हुए भी आती जाती अनुभूतियों को पढ़ते जा रहे थे।

जब पांचों पांडव युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव गुरुवर द्रोणाचार्य के गुरुकुल में दाखिल हुए तो जब गुरुवर ने पहला पाठ पढ़ाया – सत्यम्, वद, धर्मम चर। तो अगले दिन जब गुरुदेव ने इस पाठ का इन्हें पांडवों से सुना तो युधिष्ठिर चुप रहा। गुरुवर भड़के –

अरे! युधिष्ठिर! तुम क्यों नहीं सुना रहे। ये चार शब्द क्या अड़चन आ गई? तो युधिष्ठिर ने बड़ी विनम्रता से कहा गुरुदेव! सत्यं वद को मैंने अभी तक व्यवहरित नहीं किया किन्तु अब सत्य के स्वरूप को मैं जान गया हूँ। अतः मैं इसकी सार्थकता मान गया हूँ। मैं सत्य के बोलने की प्रक्रिया आजन्म रखूँगा। आज तक मैं सत्य के व्यवहार में लाने का प्रयोग नहीं करता था। आज मैं सुना देता हूँ गुरुदेव सुनो सत्यम् वद यानी सत्य बोलो, धर्मम् चर यानि धर्म पर चलो। सचमुच युधिष्ठिर ने अपने पूरे जीवन भर सत्य और धर्म का अनुशीलन किया। इसी कारण युधिष्ठिर धर्मराज युधिष्ठिर के नाम से सुप्रसिद्ध हो गया। उन्होंने शब्दों के अर्थ के मर्म को जाना और सत्यता का गुण उसकी आत्मा में रच बस गया। युधिष्ठिर ने अग्निहोत्र पर बैठकर ऋग्वेद का यह मंत्र उचारा – होत्रां देवेषु गच्छति' अर्थात् शब्दार्थ होत्र की विद्या श्रेष्ठ गुणों में प्रगट होती जाती है। आचार्य द्रोणाचार्य ने सत्यव्रत को धारने में यजु. के इस वेदमंत्र को सबको उच्चारित कराया।

अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छके ये।
तन्मे राध्यताम्। इदमहमनृतात्सत्यमुपैमि।।

– तैत्तिरी. प्रपा. 10। अनु. 8

– व्याख्याकार – बाबूराम शर्मा विभाकर
52/2, लाल क्वाटर, गाजियाबाद,
मो.–9350451497

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् का 41 वां स्थापना दिवस सम्पन्न

पाखण्ड अन्धविश्वास के विरूद्ध आर्य युवा जनजागरण करेंगे

– अनिल आर्य

नई दिल्ली। मंगलवार, 4 जून 2019, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, नई दिल्ली के 41वें स्थापना दिवस पर आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली में ''आर्य युवा सम्मेलन'' का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ आचार्य महेन्द्र भाई ने यज्ञ करवा कर किया ।

केन्द्रीय आर्य युवक परिशद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि आज समाज में बढ़ता हुआ पाखण्ड–अन्धविश्वास चिन्ता का विषय है जिससे युवाओं में धर्म के प्रति अरुचि हो रही है, आर्य युवा पाखण्ड और अन्धविश्वास के प्रति लोगों को जन–जागृत करेंगे और धर्म के सच्चे वैदिक स्वरूप से अवगत करवायेगे, परिषद् युवा पीढ़ी को संस्कारित व चरित्रवान बनाने के लिए व्यापक अभियान चलायेगी, उन्होंने कहा कि चरित्र निर्माण,देश भक्त युवा पीढ़ी का निर्माण आज राष्ट्र की सबसे बड़ी आवश्यकता है। राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् इस ग्रीष्मकालीन अवकाश में 18 चरित्र निर्माण शिविरों का आयोजन विभिन्न स्थानों पर कर रही है जिससे संस्कारवान युवा शक्ति का निर्माण हो सके।

उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के अध्यक्ष ओम सपरा ने कहा कि आज आर्य समाज की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक बढ़ गयी है,आज महर्षि दयानन्द जी के जीवन चरित्र व आदर्शो को जीवन में अपनाने की आवश्यकता है।

परिषद् के प्रान्तीय महामन्त्री (उ.प्र.) प्रवीन आर्य ने कहा कि चरित्रवान युवा राष्ट्र की अमूल्य सम्पति है और राष्ट्र का भविष्य ऐसे ही नौजवानों पर निर्भर है। आर्य समाज को दिग्भ्रमित युवकों को सही दिशा व राष्ट्र प्रेम से ओतप्रोत करने के लिए व्यापक अभियान चलाने की आवश्यकता है।

वैदिक विद्वान आचार्य गवेन्द्र शास्त्री ने कहा कि आज देश की 67 प्रतिशत आबादी युवाओं की है, लेकिन उनके लिए देश व समाज के पास कोई योजना नहीं है,हमें युवा पीढ़ी को पाखण्ड, अन्धविश्वास, गुरूडम वाद से बचा कर उनमें नैतिक शिक्षा, देशभक्ति, ईमानदारी, जातिवाद विहीन समाज की संरचना के लिए कार्य करना होगा। श्रीमती कविता आर्या, प्रवीन आर्या, रमेश बेदी, अशोक नागपाल के मधुर भजन हुए।

इस अवसर पर पार्षद गुड्डी देवी जाटव, यशोवीर आर्य, रामकुमार आर्य, धर्मपाल आर्य, सुशील बाली, नेत्रपाल आर्य, सन्तोश शास्त्री, वेदप्रकाश आर्य, सौरभ गुप्ता, अरूण आर्य, आस्था आर्या, सुरेश आर्य, प्रेमकुमार सचदेवा, के.एल.राणा, देवदत्त आर्य, जयप्रकाश शास्त्री, कुंवरपाल शास्त्री आदि उपस्थित थे। आर्य समाज के मंत्री देवेन्द्र भगत ने व महेन्द्र भाई ने समारोह का कुशल संचालन किया। कर्मठ कार्यकर्ता सुदेश भगत, रामचन्द्र सिंह व हरिशचन्द आर्य का ''आर्य श्रेष्ठी अवार्ड'' से अभिनन्दन किया गया।

परिषद् की ओर से 250 युवकों का ''विशाल आर्य युवक व्यक्तित्व निर्माण शिविर'' शनिवार, 8 जून से 16 जून 2019 तक शिक्षाविद डा. अशोक कुमार चौहान के सान्निध्य में ऐमिटी इन्टरनेशनल स्कुल, सैक्टर–44, नोएडा में लगेगा जिसमें सांसद डा. महेश शर्मा, सांसद स्वामी सुमेधानन्द जी, इग्नू के निदेशक डा. शशिभूशण अरोड़ा, आनन्द चौहान, डा.जयेन्द्र आचार्य आदि सम्बोधित करेंगे।

– देवेन्द्र भगत–प्रवीन आर्य,
प्रेस सचिव
फोनः 9958889970,9911404423

स्वास्थ्य चर्चा

एसिडिटी का कारण और निवारण

वैसे तो अम्लपित्त रोग कोई गम्भीर रोग नहीं है, पर रोग के गम्भीर कारणों की वजह से लोग हमेशा के लिए इस रोग के रोगी बन जाया करते हैं। अम्लपित्त (Acidity) रोग को एसिड डिस्पेपसिया, एसिड गेस्ट्राइटिस और हाइपर क्लोरहाइड्रिया के नाम से भी जाना जाता है। इस रोग का इतिहास बहुत ही पुराना है। वैसे तो आयुर्वेद के ग्रन्थ चरक संहिता व सुश्रुत संहिता में अम्लपित्त रोग का स्पष्ट रूप से जिक्र नहीं है। इस रोग का जिक्र, आयुर्वेदिक सबसे पहले अपनी संहिता में आचार्य कश्यप ने किया था। इसके पश्चात् अपने ग्रन्थ 'माधव निदान' में माधवाकार ने एक स्वतन्त्र रोग के रूप में अम्लपित्त रोग का पूर्ण रूप से व्याख्या किया है। लगातार बासी व तामसिक भोजन खाने से शरीर में बहुत ज्यादा अम्ल तथा पित्त का निर्माण होता है। इसी को अम्लपित्त कहते हैं। बदलती ऋतुओं से इस रोग का सीधा सम्बन्ध है। शरद् ऋतु और वर्षा ऋतु में यह रोग ज्यादा पैर पसारता है। इस रोग में रोगी के आमाशय में अम्ल और पित्त का निर्माण बहुत ज्यादा होने लगता है, जो इस रोग के जनक बन जाया करते हैं। तब गैस्ट्रिकम्यूकोसा में उत्तेजना पैदा होती है, जिससे हाइपर एसिडिटी का शरीर में निर्माण होता है। कई बार रोग की अवस्था में उचित उपचार न कराने की वजह से रोगी गैस्ट्रिक और ड्यूडिनल अल्सर का शिकार बन जाया करता है। रोग की गम्भीर अवस्था में रोगी को कैंसर भी हो सकता है।

लक्षण

- अम्लपित्त रोगी को थकान रहने लगती है।
- रोगी को पेट में भारीपन का एहसास होता रहता है।
- रोगी को उबकाई आती है। उसकी उबकाई में पीला, नीला, हरा या लाल रंग का पित्त निकलता है।
- रोगी को भोजन से अरुचि सी हो जाया करती है। उसे डकार आती रहती है।
- रोगी के पेट, छाती और गले में जलन रहने लगती है।
- रोगी के मुँह का स्वाद कसैला व कड़वा रहने लगता है। रोगी के मुँह में अम्लपित्त की वजह से छाले हो जाया करते हैं।
- रोगी के दांत भी खट्टे रहने लगते हैं।
- भूखा पेट रहने पर रोगी को जलन का एहसास होता है और भोजन कर लेने के पश्चात् जलन में कुछ वक्त के सिर आराम-सा पड़ जाया करता है।
- रोगी को सही नींद नहीं आती है, जिससे वह हर वक्त टेंशन में रहने लगता है।
- रोगी की जीभ पर मैला पदार्थ जम जाया करता है। रोगी को गैस की प्रॉब्लम रहने लगती है। जिससे उसे अफारा, पेटदर्द और पेट फूलने की समस्या का सामना करना पड़ता है।
- रोगी के हाथ-पैरों आंखों व तलवों में जलन रहने लगती है।
- रोगी को मल-मूत्र त्यागते वक्त भी जलन की अनुभूति होती है।
- इस रोग के रोगी को बार-बार थूकने की आदत बन जाया करती है। रोगी की नाक से गर्म-गर्म सांसे निकलती हैं और उनके गुदा मार्ग से भी तीखी खट्टी और दुर्गन्ध युक्त गैसों का विसर्जन होता रहता है।

कारण

- गलत खान-पान से भी यह रोग शरीर में पनपता है।
- शराब, धूम्रपान व तम्बाकू के ज्यादा सेवन से यह रोग होता है।
- तले भुने व ज्यादा चटपटे खाद्य पदार्थों के सेवन से भी यह रोग शरीर में अपनी पैठ बनाने में सफल होता है।
- ब्रेड, जैम, जैली, फास्ट फूड, कोल्ड ड्रिंक्स आदि के सेवन से भी यह रोग होता है।
- चाय, कॉफी, बिस्कुट व ज्यादा चीनी के प्रयोग से भी यह रोग उत्पन्न होता है।
- चिन्ता व मानसिक तनाव भी इस रोग को शरीर में पैदा करते हैं।
- खट्टे खाद्य पदार्थों, सिरका, खट्टी दही, खट्टी छाछ के सेवन से भी शरीर में अम्लपित्त रोग पैदा हो जाया करता है।
- ज्यादा मात्रा में बेसन व मैदा से बने खाद्य पदार्थों के सेवन से भी अम्लपित्त रोग हो जाया करता है।
- कम मात्रा में पानी पीने से और ज्यादा उपवास व्रत रखने से भी व्यक्ति इस रोग का शिकार हो जाया करता है।
- चॉकलेट, कुल्फी, डिब्बा बन्द खाद्य पदार्थ, क्रीम, आईस्क्रीम, टॉफियाँ रोज ज्यादा मात्रा में खाने से भी अम्लपित्त रोग होता है।

- पॉलिश किया चावल खाने से भी यह रोग हो जाया करता है।
- बिना चोकर के बारीक पिसे आटे की रोटियाँ खाने से भी यह रोग सताने लगता है।
- आजकल लोग एलोपैथिक दवाओं और एंटीबायोटिक दवाओं का खूब सेवन करते हैं। इस तरह की दवाओं के ज्यादा सेवन से भोजन नलिका और आमाशय पर विपरीत प्रभाव पड़ता है, जिससे व्यक्ति की आंतों में सूजन आ जाती है, घाव हो जाता है और शरीर में अम्ल ज्यादा बनने लगता है।
- जल्दी बिना चलाये भोजन से भी शरीर में अम्लपित्त रोग पैदा होता है।
- महिलाओं में गर्भाशय के दौरान यह रोग देखा गया है।
- अजीर्ण, पुरानी पेचिश, पुराने कब्ज, मन्दाग्नि, संग्रहणी, आमाशय में सूजन, आंतों में सूजन होने की वजह से भी आम्लपित्त रोग सता सकता है।
- दांतों के रोग, आंतों के रोग, पायरिया, लीवर की खराबी, तिल्ली की खराबी भी इस रोग को पैदा करती है।
- दूषित पानी पीने से भी यह रोग फैलता है।
- ठण्डे गर्म खाद्य पदार्थों का एक-दूसरे के ऊपर सेवन कर लेने से भी अम्लपित्त रोग हो जाता है।

जड़ी-बूटियों से रोग निवारण।

- त्रिफला या आंवले के चूर्ण में शहद मिलाकर चाटने से अम्लपित्त रोग ठीक हो जाता है।
- हरड़ के चूर्ण में थोड़ा सा शहद मिलाकर चाटना चाहिए।
- अम्लपित्त रोग होने पर रोगी के शरीर में कई तरह के विकार पैदा हो जाया करते हैं। इन विकारों से छुटकारा पाने के लिए काली मिर्च सौंठ और नीम की छाल को मिलाकर बारीक पीसकर चूर्ण बना लें। इस चूर्ण को सुबह शाम एक चम्मच की मात्रा में ताजे पानी से लेने से फायदा होता है।
- अगर इस रोग की वजह से पेट में दर्द की अनुभूति होती हो तो पीपल के वृक्ष की छाल का काढ़ा बनाकर पीने से पेटदर्द में आराम मिलता है। काढ़े में गुड़ और सेंधा नमक डालना न भूलें।
- ताजा आंवले के गुदे में बारीक पिसी हुई मिश्री मिलाकर रखनी चाहिए।
- मुनक्का 10 ग्राम और सौंफ आधी मात्रा में लेकर दोनों को 100 मिली. पानी में भिगो दें। सुबह मसलकर छानकर पीने से अम्लपित्त में लाभ होता है।
- दाख, हरड़, बराबर-बराबर लें। इसमें दोनों में बराबर शक्कर मिला लें। सबको पीसकर एक-एक ग्राम की गोली बना लेने से अम्लपित्त, हृदय कंठ की प्यास, मन्दाग्नि का शमन होता है।
- पकी निबौली के तीन-चार दाने खाने से मन्दाग्नि में फायदा होता है।
- धनिया, सोंठ, शक्कर और नीम की सींक 6-6 ग्राम की मात्रा में लें। इसका क्वाथ बनाकर सुबह शाम पीने से पित्त की जलन, खट्टी डकारें, अपचन, ज्यादा प्यास मिटती है। पित्त स्वर में भी इसका सेवन लाभ पहुँचाता है।
- त्रिफला चूर्ण आधा चम्मच की मात्रा में दिन में दो-तीन बार पानी के साथ फांकने से एसिडिटी में लाभ होता है।

घरेलू उपचार

- ककड़ी या खीरे को बिना नमक के साथ खाने से अम्लपित्त रोगी ठीक होता है। ककड़ी या खीरा खाने के बाद पानी नहीं पीना चाहिए।
- अगर वायु विकार की समस्या हो और खट्टी डकारें आ रही हों तो दो आलू आग में भून लें। इसमें जीरा, काली मिर्च, थोड़ा सा सेंधानमक मिला लें। अब इसमें थोड़ा सा नींबू का रस मिलाकर इसका सेवन करें।
- गाय के दूध में गुड़ मिलाकर पीने से खूब खुलकर पेशाब आयेगा जिससे अम्लता मिटने के साथ-साथ गर्मी व जलन भी मिट जायेगी।
- गुड़ के साथ जीरे का चूर्ण लेना चाहिए।
- धनिया और अदरक को बराबर की मात्रा में लेकर पानी के साथ सेवन करने से रोग में फायदा होता है।
- एसिडिटी की समस्या हो तो नारियल का पानी पीना चाहिए।
- काली मिर्च की चटनी के साथ काले चनों को खाना चाहिए।
- प्याज के रस में नींबू का रस मिला लें। इसके सेवन से पेशाब की जलन मिटती है।

(योग सन्देश से साभार)

सार्वदेशिक प्रेस के पूर्व कर्मचारी श्री जगदीश सिंह की धर्मपत्नी का निधन

सार्वदेशिक प्रेस के पूर्व कर्मचारी श्री जगदीश सिंह जी की धर्मपत्नी श्रीमती शान्ती देवी का गत 6 जून को देहावसान हो गया। वे काफी समय से बीमार थीं। वे अपने पीछे एक पुत्र तथा तीन पुत्रियाँ (सभी विवाहित) छोड़ गई हैं। दिनांक 7 जून, 2019 को उनका अन्तिम संस्कार निगम बोध घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। अन्तिम संस्कार के समय उनके परिवार के सदस्य, परिजन तथा उनके मित्र उपस्थित रहे। सार्वदेशिक सभा परिवार दुःख की इस घड़ी में श्री जगदीश सिंह जी के साथ है तथा परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शांति एवं परिवारजनों को इस असह्य कष्ट को सहने करने की शक्ति प्रदान करने की कामना करता है।

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

आर्य पुरोहित सभा दिल्ली के प्रतिष्ठित सदस्य श्री ऋषिपाल शास्त्री की धर्मपत्नी स्वर्गीया श्रीमती किरण आर्या की पुण्यतिथि पर विशेष कार्यक्रम किया गया आयोजित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं कार्यकारी प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी जी ने कार्यक्रम में सम्मिलित होकर दिवंगत आत्मा को दी श्रद्धांजलि

आर्य पुरोहित सभा दिल्ली के प्रधान आचार्य प्रेमपाल शास्त्री ने यज्ञ सम्पन्न कराया

आर्य पुरोहित सभा दिल्ली के प्रतिष्ठित सदस्य एवं आर्य समाज नवी करीम के धर्माचार्य श्री ऋषिपाल शास्त्री की धर्मपत्नी स्वर्गीया श्रीमती किरण आर्या की तीसरी पुण्यतिथि के अवसर पर आर्य समाज नवी करीम में यज्ञ एवं सभा का विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का आयोजन श्री ऋषिपाल शास्त्री, उनके सुपुत्र श्री प्रवीण आर्य एवं राहुल आर्य के अतिरिक्त परिवार के अन्य सदस्यों एवं आर्य समाज के पदाधिकारियों ने मिलकर आयोजित किया।

इस अवसर पर प्रातः 10 बजे से 11बजे तक विशेष यज्ञ किया गया जिसका पौरोहित्य आचार्य प्रेमपाल शास्त्री ने किया तथा उनके साथ दिल्ली के प्रतिष्ठित विद्वान श्री छवि कृष्ण शास्त्री एवं श्री रघुराज शास्त्री भी सहयोगी रहे। यज्ञ के उपरान्त कार्यक्रम सभा में परिवर्तित हो गया जिसमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, कार्यकारी प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी जी, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी, आचार्य रघुराज शास्त्री जी, श्री जय प्रकाश शास्त्री, श्री कंवरपाल शास्त्री, वैद्य राधेश्याम आर्य आदि ने दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की।

जयपुर से विशेष रूप से इस कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए पधारे सार्वदेशिक सभा के कार्यकारी प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी जी ने पत्नी के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए रामायण की चौपाईयाँ सुनाकर बताया कि जिस प्रकार से सीता को रावण द्वारा हरण करने के पश्चात् मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी व्याकुल एवं विह्वल हो गये थे और सीता के वियोग से अत्यन्त दुःखी थे, उसी प्रकार जब गृहस्थ जीवन में पत्नी का देहावसान हो जाता है तो उसके पति की अवस्था क्या होगी इसी से अनुमान लगाया जा सकता है। स्वर्गीया श्रीमती किरण आर्या एक धर्मपरायणा, विदुषी एवं सहृदय देवी थीं। उनके निधन का श्री ऋषिपाल शास्त्री एवं उनके सुपुत्रों को जो दुःख हुआ है उस दुःख को हम सभी लोग मिलकर कम कर सकें इसी प्रयोजन से ये कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। श्री सामवेदी जी ने जीवन में आने वाले इस प्रकार के संकटों को सहन करने की शक्ति भगवान से मांगने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि मैं स्वयं पिछले दिनों ऐसे कई संकटों से गुजरा हूँ और उन पहाड़ के समान संकटों को सहन करने की शक्ति परमपिता परमात्मा से ही प्राप्त हुई है।

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि स्वर्गीया बहन किरण आर्या का निधन बहुत थोड़ी आयु में हो गया। 45 वर्ष की आयु किसी भी व्यक्ति के जीवन में विशेष युवावस्था की मानी जा सकती है। किन्तु इस आयु में यदि कोई दिवंगत हो जाये तो कवि के शब्दों में कहा जा सकता है कि – 'क्या गजब हो, ज़ब्बाये दिल, ग़र यह अन्जाम हो जाये। मुसाफिर हो राहे मंजिल और शाम हो जाये।।' मनुष्य जब अपने जीवन में लक्ष्य की ओर अथवा मंजिल की ओर अपनी यात्रा कर रहा हो या आगे बढ़ रहा हो और शाम हो जाये उसे पड़ाव करना पड़े और उसे लक्ष्य या मंजिल प्राप्त न हो सके तो उसके दिल पर क्या गुजरेगी आप स्वयं अनुमान लगा सकते हैं। श्रीमती किरण आर्या जीवन के सफर में अभी मध्य में ही पहुँची ही थी किन्तु उनके जीवन की शाम हो गई और मंजिल प्राप्त करने की यात्रा बीच में ही रूक गई। ईश्वर के अटल सत्य को स्वीकार करने के सिवाय कोई विकल्प नहीं हो सकता। अतः अपने कर्मों के अनुसार दिवंगत किरण आर्या जी को जितना समय भगवान ने दिया उसे वह अच्छी प्रकार से भोग कर नया जीवन प्राप्त करने के लिए चली गईं। अब देखना यह है कि उनकी स्मृतियों को या उनके अच्छे गुणों को किस प्रकार सदैव स्मरण किया जा सके और प्रेरणा प्राप्त की जा सके और वह आत्मा सदैव अमर हो सके, ऐसे कार्यक्रम उनकी पुण्यतिथि के अवसर पर आयोजित किये जाने चाहिए। स्वामी जी ने सुझाव दिया कि श्रीमती किरण आर्या की स्मृतियों को स्थाई बनाने के लिए कोई ठोस रचनात्मक कार्यक्रम बनाया जाये जिसमें गरीब विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति, असहाय महिलाओं की सहायता, अनाथालयों, गुरुकुलों, गौशालाओं एवं अन्य सामाजिक कार्यों के लिए उनकी स्मृति में विशेष सहयोग देने की योजना तैयार करनी चाहिए। इससे जहां उस दिवंगत आत्मा को सदैव स्मरण रखा जायेगा वहीं त्याग, समर्पण, सेवा एवं परोपकार के संस्कार हमारे बनेंगे और हमारा जीवन भी उन्नत होगा। स्वामी आर्यवेश जी ने नारी जाति के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि धार्मिक विदुषी एवं संस्कारित मातृशक्ति ही संसार को संस्कारित एवं व्यवस्थित कर सकती हैं। जिस प्रकार विदुषी विद्योत्मा ने एक अनपढ़ व्यक्ति को संस्कृत के महाविद्वान कालिदास के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया था। उसी प्रकार प्रत्येक महिला में यह शक्ति होती है कि वह अपने ज्ञान, अनुभव एवं धार्मिक आचरण से बच्चों का निर्माण कर सकती है तथा बड़ों का भी मार्गदर्शन कर सकती है। स्वामी जी ने श्री ऋषिपाल शास्त्री एवं उनके दोनों सुपुत्रों को प्रेरित किया कि वे अपने जीवन में सदैव शुभ कार्यों को करने वाले बनें और अपने शुभ कार्यों से सदैव यशस्वी बनें। स्वामी जी के सारगर्भित व्याख्यान को श्रोताओं ने एकाग्रचित होकर सुना और विशेष संकल्प भी इस अवसर पर सभी ने ग्रहण किये।

अन्त में श्री ऋषिपाल शास्त्री ने सभी विद्वानों एवं आगन्तुक महानुभावों का विशेष आभार व्यक्त किया और स्वामी आर्यवेश जी, श्री सत्यव्रत सामवेदी जी, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी आदि का माल्यार्पण द्वारा विशेष सम्मान भी किया। शांति पाठ एवं प्रीतिभोज के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।